संपादकीय

दक्षिण भारत के पाँच राज्य आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटक,तमिलनाडु और केरल अपनी सांस्कृतिक विरासत, कला, ऐतिहासिकता और भव्यता के लिए ख्याति प्राप्त हैं। आंध्र राज्य का इतिहास शातवाहनों से आरंभ होता है। चार शताब्दियों के शासन काल में शातवाहनों ने इस राज्य को सुव्यवस्थित बनाया था। शातवाहनों के पश्चात चोल, पल्लव, काकतीय, मुसलमान, फ्रेंच तथा अंग्रेजों ने अपनी संस्कृति व प्रगति से इसे सुसंपन्न किया है। इस प्रकार आंध्र में विभिन्न संस्कृतियों का सम्मिश्रण पाया जाना स्वाभाविक है। यह प्रदेश धार्मिक रूप से सम्पन्न राज्य है। यहाँ पर वैदिक, बौद्ध, इस्लाम, सीख, ईसाई धर्म, ब्रह्म समाज, आर्य समाज आदि अपने वैभव के साथ विराजमान हैं। साहित्य की बात करें तो नन्नय्या, पाल्कुरिक सोमनाथ, तिकन्ना, श्रीनाथ पोतना आदि ने अपनी रचना से तेलुगु साहित्य को अमर किया है। आंध्र प्रदेश की शिल्प कला अति समृद्ध है। 'अमरावती स्तूप,' 'रामप्पा मंदिर', 'वीरभद्र मंदिर की शिल्पकला,' कुतुबशाही समाधि' आदि शिल्प कला जहां इतिहास का वर्णन करती हैं वहीं इससे तत्कालीन वैभवपूर्ण रियासतों का भी पता चलता है। आंध्र की ही तरह कर्नाटक की संस्कृति अति समृद्ध है। कर्नाटक विभिन्न जनजातियों का घर है यथा – कोडावास, कोंकड़िया और तुलुवास आदि। ये समस्त समुदाय अपनी संस्कृति, कला, उत्सव से कर्नाटक को वैभव युक्त बनाते हैं। इस राज्य का 'हम्पी महोत्सव' अति महत्वपूर्ण है। यह महोत्सव विजायर्घ राजाओं की आभा को याद करके मनाया जाता है। इसी प्रकार के अन्य त्यौहार 'हलेबिड', 'पट्टड़कल', 'करवल्ली' और लककुंडी जैसे स्थानों पर भी आयोजित किए जाते हैं। कर्नाटक में बौद्ध और जैन धर्म का व्यापक प्रभाव है। यहाँ की भूमि विभिन्न धर्म के संतों की कर्मभूमि रही है। रामानुजाचार्य,माध्वाचार्य,शंकराचार्य आदि ने अपने मत और विचार का खूब प्रचार प्रसार किया था। इस कारण जैन व बौद्ध धर्म के साथ ही साथ यहाँ की धरती पर अनेक प्रकार के धर्म स्थापित हैं। अतरंगी भाषा और सभ्यता लिए कर्नाटक राज्य ऐतिहासिकता, राजनीति, प्रद्योगिकी, शिल्पकला, वास्तुकला, नृत्य, संगीत और आधुनिकता में अग्रसर है। मकरसंक्रांति का त्यौहार यूं तो भारत के अलग अलग राज्यों में भिन्न भिन्न कारण से मनाया जाता है परंतु दक्षिण भारत के सभी राज्यों में यह त्यौहार मुख्य पर्व है। उत्तर में जो उल्लास दीपावली और दशहरा का रहता है, दक्षिण में वही उत्साह मकरसंक्रांति का है। संक्रांति दक्षिण भारत का महत्वपूर्ण त्यौहार है।

समाज में सौमनस्यता बनाए रखने की जो बुनियाद है वह है, व्यक्ति का दूसरे के साथ मैत्री पूर्ण व्यवहार, सद्भावना और संस्कार। दक्षिण भारत का प्रत्येक राज्य इस गुण में पारंगत है। आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, या फिर कर्नाटक राज्य में अल्प समय व्यतीत करने पर ही स्पष्ट हो जाता है कि यहां के सत्तर प्रतिशत जनमानस अति भले और स्वभाव से पारदर्शी होते हैं। बड़े ही सात्विक भाव से लोगों के सहायतार्थ उपस्थित रहना, उन्मुक्त हंसी से सामने वाले के

अन्तर्मन में अमिट छाप छोड़ना दक्षिण भारत के लोगों का स्वभावगत वैशिष्ट्य है। अपनी पारंपरिकता को सहेज कर उसका अनुपालन करना, अपनी मातृभाषा के प्रति जागरूकता दक्षिण भारत के कण कण में व्याप्त है। दक्षिण भारत की ऐतिहासिकता, यहाँ की कला,संस्कृति, साहित्य सबमें एक विशेष प्रकार की वैज्ञानिकता और पौराणिकता है। मकर संक्रांति का पर्व, ओणम, उगादी आदि त्यौहार पर प्रत्येक व्यक्ति पारंपरिक वेश – भूषा और पूजा – पाठ में तल्लीन दिखाई देता है। एक नवंबर को कन्नड राज्योत्सव का भव्य आयोजन मास भर रहता है। सांस्कृतिक कार्यक्रम, शैक्षिक परिसरों में विविध प्रकार की प्रतियोगिताएं, रेडियो, टी वी कलाकार का योगदान, रंगारंग विविध कार्यक्रम नवंबर महीने को हर्षोल्लास पूर्ण बनाती है। इन विविधताओं और विशिष्टताओं को ध्यान में रखते हुये प्रधान संपादक का यह सुझाव आया कि 'अनुकर्ष' का द्वितीय अंक "दक्षिण भारत की कला, साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक विरासत" विषय पर निकाला जाए और उसी का प्रतिफल यह अंक है। इस अंक में जिन लेखकों, कवियों, अध्येताओं ने अपनी रचनायें दी हैं उन सबके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ। विश्वास है कि यह अंक दक्षिण भारत की संस्कृति को समझने में सहायक बनेगा। पाठकों के सुझाव और पत्र सादर आमंत्रित हैं।

धन्यवाद

डॉ॰ अनुपमा तिवारी

असिस्टेंट प्रोफेसर,हिन्दी

अलायंस विश्वविद्यालय,

बंगलूरू कर्नाटक।